International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.2 Nov-Dec 2024

प्रेमचन्दजी और वि.स. खांडेकरजी के उपन्यास साहित्य में वेश्या नारी की स्थिति

प्रा.डॉ.जयश्री बाबासाहेब काशीद
हिंदी विभाग, डॉ.गणपतराव देशमुख महाविद्यालय, सांगोला
Corresponding Author: प्रा.डॉ.जयश्री बाबासाहेब काशीद
DOI- 10.5281/zenodo.14551570

प्रस्तावना :

नारी यह एक समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है | नारी की जरा सी भूल पर समाज उसे बहिष्कृत कर देता है | उसके पतिता होने में पुरुष का भी हाथ होता है, परंतु समाज पुरुष को पतित नहीं समझता | नारी अगर पतिता होती है तो उसे कलंकिनी कहा जाता है | परिवार के लोग उससे बात भी नहीं करते हैं | नारी का कलंकित रुप वेश्या का है | ऐसी नारी के लिए सिर्फ दो ही मार्ग रहते हैं | एक तो वह आत्महत्या करती है या तो दूसरी ओर अपने निर्वाह के लिए वेश्यावृत्ति अपनाती है |

प्रेमचन्दजी और खांडेकरजी ने वेश्यावृत्ति के लिए नारी को जिम्मेदार नहीं ठहराया है | उन्होंने इसके लिए उन परिस्थिति को ही उसका कारण माना है जिसके लिए नारी विवश होकर वेश्यावृत्ति को अपनाती है | अनमेल विवाह अशिक्षा से उत्पन्न आर्थिक पराधीनता, स्त्री के चरित्र पर शंका और पारिवारिक कलह आदि ऐसे कारण है जो वेश्या समस्या के जन्मदाता है |

प्रेमचन्दजी के उपन्यास 'सेवासदन' वेश्या समस्या एक ज्वलंत समस्या है | सुमन कुलीन घर की लडकी है | उसका विवाह एक दोहाजू गजाधर से होता है | उसे अपने पति के घर में न सुख मिला न आदर | सुमन सुखोपभोग को ही केवल अपना सर्वस्व मानती है | ऐसी विषम परिस्थिति में पत्नी का कर्तव्य निभाना उसे कठिन प्रतीत होता है | सुख प्राप्ति की तृष्णा बार-बार उसे सताने लगती है | सुमन के घर के सामने भोली वेश्या रहती है | भोली वेश्या का वैभव देखकर सुमन का हृदय-अतृप्त आकांक्षाओं और दमित वासनाओं से जागृत होता है |

पति की दरिद्रता, कृपणता, प्रेम-हीनता और कठोरता के कारण सुमन अपने ही घर में उपेक्षित थी | उसका पति संशयी वृत्ति का होने के कारण वह सुमन पर लांछन लगाता है और व्यंग्य कसता है । सुमन मार-पीट खा सकती है परंतु मिथ्या दोषारोपण के अपमान को सह नहीं सकती है | गजाधर सुमन को घर से बाहर निकाल देता है | घर से निकाल देने पर एक अबला नारी का कहीं भी ठिकाना नहीं होता, वह कहीं भी सुरक्षित नहीं रह सकती | सुमन सिलाई करके अपना गुजारा करना चाहती है | पुरुष की कामुक प्रवृत्ति उसे वहाँ भी चैन से जीने नहीं देती | आखिर सुमन चारों ओर से हताश होकर अंत में भोली के कोठे पर जाने के लिए और वेश्या बनने के लिए विवश होती है |

अनमेल विवाह के कारण सुमन वेश्या बनती है | समाज सुधारक विठ्ठलदास से स्वयं सुमन वेश्या-वृत्ति अपनाने का मूल कारण बताती है । **मैं एक ऊँचे कुल की लडकी हूँ | पर भी मुझसे अपना अपमान न सहा जाता था | जिसका निरादर होना चाहिए उसका आदर होते देखकर मेरे हृदय में कुवासनाएँ उठने लगी थी ।** समाज में वेश्याओं का आदर-सम्मान होता है बल्कि कुलीन स्त्रियों का नहीं ।

मेरे विचार से सुमन को संतान होती तो वह ऐसा घृणित कार्य न करती | उसे पति का प्यार और आदर-सम्मान मिलता तो वह गृहत्याग न करती परंतु वहाँ भी नियति ने उसका साथ नहीं दिया और वह वेश्या बन गई।

'सेवासदन' की भोली अपनी विलास-लालसा और इन्द्रिय सुखभोग की तृष्णा के लिए वेश्या बनती है | भोली के माता-पिता रुपयों के लोभ से भोली का विवाह एक वृध्द से करते हैं । यह विवाह भोली की मर्जी के खिलाफ था। एक किशोरी कन्या को एक वृध्द के गले बाँधना कितना जुल्म और सितम है | इसी कारण भोली अपनी अतृप्त आकांक्षाओं की तृप्ति के लिए वेश्या बनती है ।

'गबन' उपन्यास की जोहरा एक वेश्या है । जोहरा के माध्यम से प्रेमचन्दजी ने यह दिखाया है कि वेश्या वास्तव में बुरी नहीं होती है । परिस्थिति के कारण वह मजबूर होकर वेश्या बनती है और अवसर मिलने पर वह सुधर भी जाती है । लोग अपना दिल बहलाने के लिए और वासनातृप्ति के लिए वेश्या के पास आते हैं । रमाकांत का मनोरंजन करने के लिए पुलिस वेश्या जोहरा की नियुक्ति करते हैं । रमाकांत का विशुध्द प्यार पाकर जोहरा मन ही मन खुश होती है । वेश्या वफादार नहीं होती है परंतु जोहरा रमाकांत को विश्वास दिलाती हुई कहती है, **हाँ साहब, हम वफा क्या जाने, आखिर वेश्या ही तो ठहरी बेवफा वेश्या भी कही वफादार हो सकती है ।** जोहरा अपने जीवन में सच्चा प्रेम और सहानुभूति पाकर वेश्यावृत्ति छोडकर साधा जीवन बिताने लगती है । वेश्यावृत्ति त्यागकर जोहरा का जीवन आदर्शमय बनता है । दूसरों के प्राण बचाने के लिए जोहरा अपने प्राण त्याग देती है ।

वि.स. खांडेकरजी ने अपने उपन्यासों में वेश्या नारी की स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है ।

वि.स.खांडेकरजी के 'उल्का' उपन्यास की निरा का विवाह एक मानवी राक्षस के साथ होता है। निरा सुंदर होने के कारण उसका पति उसे शक की दृष्टि से देखता है | निरा का पति उसे हरदम मारता रहता है | माता के प्रकोप से निरा का पति अंधा होता है । उसे महारोग होता है । गाँववाले उसे गाँव के बाहर झोपडी में रखते हैं । निरा भी अलग झोपडी में रहती है । वसंत निरा के सौन्दर्य की ओर आकर्षित होता है । निरा को कुमार्ग पर जाने के लिए वसंत ही बाहय करता है । पेट की चिंता के कारण निरा वेश्यावृत्ति को अपनाती है ।

'दोन मने' उपन्यास की चपला, एक वेश्या की बेटी है । चपला की माँ चपला को वेश्या बनाना चाहती है । चपला अपने माँ के विचार सुनते की गृहत्याग करती है । चपला वेश्या व्यवसाय त्यागकर सिनेमा अभिनेत्री बनती है । शारीरिक शृंगार करनेवाले पुरुष तो चपला ने बहुत देखे हैं परंतु उसके मन की उन्नति सिर्फ श्री ने की है । मेरी दृष्टि से समाज में लोग केवल वेश्याओं के शरीर का शृंगार करते हैं और उनका अस्वाद एवं उपभोग करते हैं । वेश्या भी एक मानव प्राणी है । उसे भी मन और विचार है लेकिन उसके मन और विचार का कोई भी विचार नहीं करता । सिर्फ उसे एक उपभोग की वस्तु की तरह देखा जाता है ।

वेश्या नारी मूलतः दुराचारिणी नहीं होती है । पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियों से विवश होकर ही वेश्या बनती है । नारी अपने सतीत्व को सबसे मूल्यवान समझती है । जीवन निर्वाह के लिए अन्य मार्ग न होने से अथवा समाज के अत्याचारों से ही वह पतिता होती है । प्रेमचन्दजी और खांडेकरजी अपने उपन्यासों में वेश्या नारी के प्रति सहानुभूति रखते हैं । घृणा के पात्र तो समाज है । उन्होंने अपने उपन्यासों में वेश्यावृत्ति का स्वीकार करने को नारी क्यो उदयत होती है और उससे उसे दूर रखने में कैसे प्रयत्नशील रहना चाहिए यह बतलाया है ।

संदर्भ:

1. मुन्शी प्रेमचन्द सेवासदन ५६ २००७
2. मुन्शी प्रेमचन्द गबन २६२ २००८